8

मसीह की सेवकाई की श्रेष्ठता

(8:1–13)

अध्याय 8 की पहली आयतें पुत्र के याजकीय पद से जिसकी चर्चा 4:14—7:28 में की गई थी, थोड़ा-सा उसकी और उत्तम याजकीय सेवकाई की ओर हो लेती हैं (आयतें 1–5)। इब्रानियों की पुस्तक हमारे महायाजक के रूप में मसीह की श्रेष्ठता के सम्बन्ध को इन सच्चाइयों को बताती है:

1. मसीह को परमेश्वर द्वारा मलिकिसिदक की रीति पर बुलाया गया था (5:10)।
2. ईश्वरीय शपथ ने मसीह को पद पर रखा (7:20–22)।
3. उसकी उच्च याजकाई अटल है (7:23, 24)।
4. उसका काम पूरी तरह से प्रभावी है (7:25)।
5. उसकी व्यक्तिगत योग्यताओं ने उसे हमारे महायाजक के रूप में सदा के लिए सेवा करने के योग्य बनाया (7:26–28)।
6. वह स्वर्गीय तम्बू में सेवा करता है न कि पृथ्वी के तम्बू में (8:1–5)।
7. वह नई वाचा देने में भागीदार था, जो पूर्ण क्षमा देती है ताकि हमारे पाप हमारे विरुद्ध याद न किए जाएं (8:6–13)।

हमारे महायाजक की सेवकाई की क्या विशेषताएं हैं?

उसकी नई सेवकाई (8:1-5)

सच्चे तम्बू में सेवक (8:1, 2)

[1]अब जो बातें हम कह रहे हैं, उनमें से सबसे बड़ी बात यह है कि हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्ग पर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा। [2]और पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं, वरन प्रभु ने खड़ा किया था।

आयत 1. सबसे बड़ी बात के लिए शब्द (*kephalaios*) का अर्थ "जोड़," "सार,"

या ''मुख्य बात'' हो सकता है। अन्त वाला उत्तर बेहतर है क्योंकि यह भाग लेखक के तर्क के चरम को दिखाता है और सार से बढ़कर है।[1] हमारा महायाजक निकम्मी वाचा के सम्बन्ध में सेवा नहीं कर सकता; उसका स्थान श्रेष्ठ वाचा के साथ है।

मसीह **जा बैठा** है क्योंकि बलिदान का उसका कार्य पूरा हो चुका है। ''बैठा'' शब्द सुझाव देता है कि वह अपने सिंहासन पर हमारा राजा बनकर शासन करता है। कोई यहूदी महायाजक कभी *सिंहासन* पर नहीं बैठा था। ज़ोर इस बात पर है कि हमारा एक महायाजक है, जिसका परिचय निष्पाप है। इब्रानियों की पुस्तक यह स्पष्ट कर देती है कि वास्तविक संसार जिसे हम विश्वास से स्वीकार करते हैं, अदृश्य है (आयत 2); यह वह क्षेत्र है, जिसमें मसीह ''महायाजक'' (6:20) या ''सेवक'' है (8:2)। वर्तमान तम्बू ''असली'' तम्बू की ''नकल'' ही है (8:5; 9:24), परन्तु यह हमें एक ''स्वर्गीय देश'' का आश्वासन देता है (11:16)।

स्वर्ग शब्द सही है, क्योंकि इब्रानियों की पुस्तक में मूल धर्मशास्त्र में दस में से सात में इसे बहुवचन में दिया गया है। इफिसियों में यह शब्द हर जगह बहुवचन में ही है। इब्रानियों 9:23 में बहुवचन में है, जबकि 9:24 में एक वचन में है। यदि अन्तर रखने का इरादा था जो मामूली सा अन्तर है।[2] बहुवचन में इस विचार का सुझाव मिल सकता है कि यह वही स्थान है, जहां परमेश्वर वास करता है और मसीह उसके साथ है।

गैर-मसीही यहूदी अपने आपको परमेश्वर के ठहराए हुए अपने महायाजक के होने के कारण श्रेष्ठ मानते थे, जिसमें मसीही प्रबन्ध को घटिया माना जाता था क्योंकि इसमें महायाजक नहीं था। परन्तु पहली सदी में बहुत से लोग अपने महायाजकों को तिरस्कार भरी नज़रों से देखने लगे थे। एसेनी लोग जिसका इस्तेमाल कुमरान समुदाय के लोगों के लिए जहां मृत सागर की पत्रियां मिलीं, जोसेफ़स द्वारा किया गया, उन्हीं में से थे। उनका मानना था कि परमेश्वर ने उनके महायाजक को ठुकरा दिया है।[3] इसके बावजूद उनका विश्वास था कि वे मसीही लोगों से कह सकते हैं, ''हमारे पास परमेश्वर द्वारा ठहराया महायाजक है जबकि तुम्हारे पास नहीं है।'' इसके विपरीत मसीह इतना श्रेष्ठ है कि वह स्वर्ग से परमेश्वर के दाहिने **हाथ से** राज करता है। किसी मानवीय याजक के लिए यह बात नहीं कही जा सकती।

आयत 2. मसीह तम्बू का सेवक है। ''सेवक'' (*leitourgos*) शब्द का अर्थ ऊंचे पद वाला सरकारी अधिकारी या ''याजकीय सेवक'' है। ''तम्बू'' स्वर्ग को जो असल ''परम पवित्र स्थान'' है, कहा गया है, जहां यीशु परमेश्वर की उपस्थिति में सेवा करता है। पृथ्वी का महायाजक पवित्र स्थान में सेवा करता था, जो स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिबिम्ब या प्रतिरूप था। **सच्चे** का अर्थ प्रतिबिम्ब के पूरा होने, असल चीज़ है न कि और इसका इस्तेमाल यहां ''झूठा'' के उलट नहीं किया गया है। सच्चा तम्बू (*skēnē*) यहां स्वर्ग को ही कहा गया है। अपने बीच परमेश्वर के लिए निवास स्थान के रूप में इस्राएलियों द्वारा बनाया गया तम्बू उन आशिषों का प्रतिरूप या प्रतिबिम्ब है (आयत 5), जो हमें नई वाचा में मिली हैं। प्रकाशितवाक्य 8:3-5 में स्वर्गीय तम्बू को ''वेदी'' के हवाले से और प्रकाशितवाक्य 11:19 में फिर दिखाया गया है जहां इसे ''मन्दिर'' कहा गया है। मन्दिर ने तम्बू का स्थान ले लिया था, परन्तु इब्रानियों के लेखक ने अतीत से ही जैसे यह वर्तमान में हो आदर्श ''तम्बू'' की बात की।

इस तम्बू को जिसे किसी मनुष्य ने नहीं वरन प्रभु ने खड़ा किया है, बताया गया है। यह

कलीसिया के बनाने की बात हो सकती है।[4] कलीसिया को मसीह द्वारा बनाया गया था न कि मनुष्य द्वारा। स्वर्ग के विषय में विश्वासियों के लिए यह कहना अनावश्यक होना था कि "जिसे किसी मनुष्य ने नहीं परन्तु प्रभु ने खड़ा किया।" यहां पर अन्तर परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए स्वर्गीय तम्बू और मनुष्य द्वारा बनाए गए पृथ्वी के तम्बू में है। नये नियम में कलीसिया को आम तौर पर "राज्य" बताया गया है (प्रकाशितवाक्य 1:9-11)। यीशु ने अपनी कलीसिया बनाने की बात की (मत्ती 16:18, 19) और फिर तुरन्त इसे "राज्य" कहा। अर्थ चाहे अलग हो परन्तु इस देह की सदस्यता बनाने पर विचार करने पर दोनों शब्द एक-दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल होते हैं (कुलुस्सियों 1:13, 18)। "कलीसिया" (*ekklēsia*) परमेश्वर की "सभा" है (जैसा कि सैकुलर यानी सांसारिक सभा के सम्बन्ध में प्रेरितों 19:39, 41 में इसका सही अनुवाद किया गया था)। इसे स्वर्ग में ठहराया गया था और अपने अस्तित्व से यह परमेश्वर की बुद्धि को दिखाती है (इफिसियों 3:10)। यदि तम्बू का पवित्र स्थान कलीसिया का प्रतिबिम्ब था तो क्या बदले में कलीसिया स्वर्ग का सांसारिक प्रतिनिधित्व या प्रतिबिम्ब नहीं हो सकती थी? हो सकता है कि इसी कारण इसे आम तौर पर "स्वर्ग का राज्य" (मत्ती में बत्तीस बार) कहा गया? कलीसिया का स्वर्ग से ही सम्बन्ध है, जो तम्बू के पवित्र स्थान का परम पवित्र स्थान से था।

तम्बू में की वस्तुएं जो कलीसिया की रीतियों से मेल खाती हैं, में मेज़, धूप की वेदी और दीवट थे। मेज़ कलीसिया में प्रभु भोज का प्रतीक हो सकता है। मेज़ से रोटियां याजकों द्वारा हर सप्ताह खाई जाती थीं जबकि नये नियम की कलीसिया प्रभु भोज हर सप्ताह मनाती है (प्रेरितों 20:7)। उठते धुएं के साथ धूप की वेदी हमारी प्रार्थनाओं और गाने में स्तुति करने के साथ मेल खा सकती है (देखें इब्रानियों 13:15; प्रकाशितवाक्य 8:4 के निकट सम्बन्ध को देखें)। सात दीयों वाला दीवट परमेश्वर के वचन की ज्योति को दिखा सकता है (भजन संहिता 119:105)। नये नियम के अनुसार हमारे मसीही प्रभाव की ज्योति हमारे इसके प्रकाश में चलते हुए परमेश्वर के वचन से निकलती है (मत्ती 5:14; 1 यूहन्ना 1:7)। 1 कुरिन्थियों 3:16 में मसीही लोगों को परमेश्वर का मन्दिर (वास स्थान) कहा गया है। इस कारण कलीसिया को "सच्चा तम्बू" या परमेश्वर का वास स्थान कहा जा सकता है, जिसका पुराना तम्बू प्रतिबिम्ब था।

कुछ भेंट के साथ याजक (8:3, 4)

[3]क्योंकि हर एक महायाजक भेंट, और बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया जाता है, इस कारण अवश्य है, कि इसके पास भी कुछ चढ़ाने के लिए हो। [4]यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता, इसलिए कि व्यवस्था के अनुसार भेंट चढ़ाने वाले तो हैं।

आयत 3. इब्रानियों 5:1 बताता है कि याजक का काम आवश्यक बलिदानों के द्वारा लोगों के पापों के साथ निपटना होता था। परन्तु यह काम करने वाले व्यक्ति को भेंट, और बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया जाना आवश्यक था। हमारे महायाजक के अपनी भेंट बिल्कुल वैसे ही देने की बात आगे बताई गई है (9:14); यह तो ऐसा है जैसे लेखक इसके बारे में बताने से पहले जिज्ञासा उत्पन्न करना था। पृथ्वी के याजक के रूप में यीशु को अपना बलिदान भेंट करने को

जगह नहीं होनी थी, क्योंकि पृथ्वी का पवित्र स्थान (मन्दिर) मूसा की व्यवस्था की आज्ञा मानने वाले यहूदी याजकों से भरा हुआ था (आयत 4; देखें 7:12–14)। "यह [आयत] यह समझाते हुए कि यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान याजकाई का कोई काम क्यों नहीं किया, काफ़ी आगे निकल जाती है।"[5] परमेश्वर ने एक समय में केवल एक ही याजकाई को अधिकृत किया; उसने एक ही व्यवस्था के अधीन एक ही समय में दो याजकाइयों को काम करने की अनुमति नहीं देनी थी। न ही परमेश्वर की एक ही समय में अपने लोगों के साथ दो वाचाएं लागू हो सकती हैं। (यह रोमियों 7:13,14 की खामोशी के तर्क जैसा है।)

आयत 4. यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता। यीशु स्वर्ग में सेवा करता है, जो कि उसकी श्रेष्ठता को दिखाने का एक और उल्लेखनीय अन्तर है। वह लेवी के गोत्र या हारून के परिवार से नहीं था (7:14), इस कारण याजकाई के सम्बन्ध में वह "साधारण व्यक्ति" था। बेशक सांसारिक ढांचे में याजक स्वर्गीय पवित्र स्थान में सेवा करने वाले से कहीं कम है।[6] परमेश्वर का वास स्थान अब सांसारिक मन्दिर में नहीं है।

यीशु का बलिदान तो क्रूस पर दिया गया पर उसकी भेंट स्वर्ग में दी गई। व्यवस्था के अनुसार बलिदान भेंट करने में, पृथ्वी पर वह याजक का काम नहीं कर सकता था। इस कारण राज्य/कलीसिया स्वर्ग में मसीह के लौटने से पहले कभी स्थापित नहीं हो सकती थी, क्योंकि मनुष्यजाति के छुटकारे का साधन तब तक कानूनी तौर पर पूरा नहीं होना था (इफिसियों 5:25ख)। इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु अभी भी अपनी भेंट चढ़ा रहा है (जैसे फिलिप्स ने अनुवाद किया है), क्योंकि उसकी भेंट सदा के लिए दी गई थी (7:27; 9:28)। यह एक भेंट ही हमारे पापों के निरन्तर शुद्धिकरण में हमारे लिए निरन्तर प्रासंगिक है (1 यूहन्ना 1:7)। यह सदा तक रहने वाली सामर्थ है और उनका जो मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, उद्धार करती रहती है (7:25)।

ध्यान दें कि याजक अकेले बलिदान चढ़ाते थे। आधुनिक याजक ऐसी क्षमता में उपयोगी नहीं हो सकता क्योंकि यीशु ने पाप के लिए एक ही बार बलिदान चढ़ा दिया है। अतिरिक्त भेंटें अनावश्यक हो जानी थीं। एकमात्र बलिदान जिसकी आज हमें आवश्यकता है, वह उसके लिए प्रतिदिन जीकर अपने राजा की सेवा करते हुए, अपने जीवनों का निजी बलिदान देना है (रोमियों 12:1, 2)।

नमूने के अनुसार याजक (8:5)

[5]वे स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं, जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चेतावनी मिली, कि देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार वह सब कुछ बनाना।

आयत 5. लेवीय याजक स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते थे। व्यवस्था को मानते हुए वे उन बातों पर भावनात्मक रूप से निर्भर थे जो निकम्मी हैं और आसानी से नष्ट हो जाती हैं। मूसा को सीनै पर्वत पर जो दिखाया गया था एक अर्थ में वह स्वर्ग में

परमेश्वर के वास स्थान की नकल ही था। यह तो ऐसा है जैसे लेखक दो संसारों की बात कर रहा हो, जिसमें वास्तविक संसार ऊपर का है और पृथ्वी पर जो कुछ भी है, वह उसका "प्रतिरूप" है। "प्रतिबिम्ब" अस्पष्ट, रूपरेखा है न कि असल वस्तु। कुलुस्सियों 2:16, 17 में व्यवस्था के बारे में ऐसी ही बात कही गई है (इब्रानियों 10:1, 2 भी देखें)। सब्त सहित मूसा की सारी व्यवस्था आने वाली वस्तुओं का प्रतिबिम्ब ही थी। कुछ लोग इसके संस्कार का वर्णन करते हुए "प्रतिबिम्ब" की इस बात को केवल "रस्मी व्यवस्था" तक सीमित करने की कोशिश करते हैं; जबकि पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई अन्तर नहीं दिया गया है। यह सम्भव है कि "दोनों शब्द अस्पष्ट प्रतिरूप, स्वर्गीय वास्तविकता के केवल संकेत या सुझाव" के रूप में "एक में मिलकर" हैं।[7]

इस्राएलियों को तम्बू बनाना था, जिसके बनाने और तैयार करने का सामान बिल्कुल उसी नमूने जैसा होना आवश्यक था, जो मूसा को दिया गया था (निर्गमन 25:40)। संकेत से यह यरूशलेम के मन्दिर के लिए ही लागू होता है। प्रेरितों 7:44 में स्तिफनुस ने ऐसे ही विचार पर ज़ोर दिया और "आकार" के लिए उसी शब्द *tupos* का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ रूप या "दृष्टांत" है।[8] मूसा को अपनी समझ का इस्तेमाल करके जैसा उसे बेहतर लगे वैसे तम्बू बनाने का कोई अधिकार नहीं था। क्या अपने आज्ञापालन और परमेश्वर के "नये मन्दिर" अर्थात कलीसिया की सदस्यता में नई वाचा के अधीन ज़रा भी कम चौकस हो सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर इब्रानियों 2:1–3 में दिया गया है: "हमें और भी अधिक ध्यान देना आवश्यक है।" जहाज़ बनाने तक सीमित नूह ने पूरी तरह से आज्ञा का पालन किया। इस विचार का कि नई वाचा के अधीन कठोरता से और सावधानी से आज्ञापालन आवश्यक है, मज़ाक उड़ाने वाले कहते हैं, "नया नियम कोई नियमावली नहीं है। यह तो मानने के लिए स्पष्ट नमूनों के बिना एक प्रेम पत्र है।" बेशक परमेश्वर का वचन विस्तृत नियमावली नहीं है जिसमें क्रमबद्ध प्रश्न और उत्तर लिखे गए हों, इसके विपरीत विवरणात्मक और काव्यात्मक और प्रतीकात्मक आयतों सहित साहित्य का सुन्दर संकलन है। इसके बावजूद बाइबल का कोई भी समझदार पाठक इस बात का इनकार नहीं कर सकता कि नये नियम में ऐसे निर्देश हैं, जिन्हें "नियम" कहा जा सकता है।[9] जिमी ऐलन ने संक्षेप में कहा है, "आज नमूना वह सब है जो किसी भी विषय पर नया नियम बताता है।"[10]

मूसा को चेतावनी मिली (*chrēmatizō*), जिसका अनुवाद "ईश्वरीय रूप में समझाया गया था" हो सकता है। NKJV में मत्ती 2:12 और इब्रानियों 11:7 में इसी शब्द के लिए "ईश्वरीय चेतावनी" और प्रेरितों 10:22 में "ईश्वरीय निर्देश" है। "नमूने" **के अनुसार** संकेत देता है कि मूसा के **पहाड़ पर** होने के समय एक योजना बनाई गई थी। "नमूना" (*tupos*) का अर्थ मूलतया "फूंक" और "फूंक का प्रभाव"[11] जैसे धातु के सांचे या मोहर से लगे ठप्पे से छापा लगता है। बच्चों को अपने माता-पिता के *tupoi* (*tupo* या "प्रतिरूप" का बहुवचन) कहा गया। मूसा को दिखाया गया नमूना कुछ ऐसा था, जो आंखों को दिखाई दे सकता था (निर्गमन 25:40)। उसने "पहले से मौजूद मूल स्वर्गीय की नकल ... पवित्र स्थान के मॉडल जैसा कुछ" देखा हो सकता है।[12] जैसे फिलो ने इसे कहा है, "अपने मन से उन शरीरों के [अभौतिक] नमूने पर ध्यान किया, जिन्हें सिद्ध किया जाने वाला था।"[13] इसका अर्थ निश्चय ही यह है कि तम्बू के आत्मिक अर्थ और महत्व का अध्ययन करके हमें कुछ पता चल सकता

है कि स्वर्ग कैसा है। जैसा मूसा ने देखा कि स्वर्ग में परमेश्वर का नमूना तम्बू की औपचारिक रूपरेखा के रूप में उसकी योजना था। इस कारण यह उसका प्रतीक बन गया कि कलीसिया कैसी होगी, जो कि पूर्ण अर्थ में स्वर्ग का प्रतिरूप है। कलीसिया की चर्चाओं में भौतिक इमारत की कोई बात नहीं होती है। पृथ्वी पर कलीसिया ''स्वर्गीय स्थानों'' के बराबर है, जहां हम अब ''उसके साथ बैठे हैं'' (इफिसियों 1:3; 2:6; देखें इब्रानियों 9:23)।

उसकी नई वाचा (8:6-13)

यीशु की सेवकाई सब सेवकाइयों से ऊंची थी, क्योंकि वह सब वाचाओं से ऊंची नई वाचा का मध्यस्थ बना था। पुरानी वाचा केवल ''स्वर्ग में की वस्तुओं का प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब'' थी। यह प्रमाणिक और परमेश्वर के नमूने के अनुसार थी, परन्तु इसका प्रमुख कार्य नई वाचा की ओर ध्यान दिलाना था, जो मसीह की मृत्यु से आनी थी।

इब्रानियों 8:6–13 हमारे सामने नई वाचा की मुख्य विशेषताएं लेकर आता है। वे विशेषताएं क्या हैं?

उत्तम प्रतिज्ञाओं वाली वाचा (8:6, 7)

[6]पर उसको उसकी सेवकाई से बढ़कर मिली, क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है। [7]क्योंकि यदि वह पहिली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी के लिए अवसर न ढूंढ़ा जाता।

आयत 6. पहले तो इस नई वाचा में उत्तम प्रतिज्ञाएं थीं। यह आयत विशेष महत्व वाली है क्योंकि यह इब्रानियों की पुस्तक के पहले मुख्य विषय को संक्षिप्त करती है कि यीशु के लहू के द्वारा अर्पित किया गया नया नियम पुराने नियम से श्रेष्ठ है और उसका स्थान ले लेता है। नई वाचा की चर्चा करते हुए आगे लेखक ने पुराने नियम की केवल हवाले यिर्मयाह 31:31–34 को उद्धृत किया, जिसमें विशेष रूप में इस ''नई वाचा'' की बात की गई है।

हमारे मध्यस्थ यीशु मसीह ने कहीं ''उत्तम प्रतिज्ञाओं'' वाली ''उत्तम वाचा'' दी। यह पुरानी वाचा के अधीन बलिदान किए गए पशुओं के जीवन प्राण से श्रेष्ठ प्राण देने के द्वारा दी गई। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यह साबित करने के लिए कि प्रभु यीशु उत्तम वाचा का मध्यस्थ है तर्कसंगत दलीलों और पवित्र शास्त्र का इस्तेमाल किया। इब्रानियों 9:16, 17 और मत्ती 26:28 में ''वाचा'' के लिए शब्द (*diathēkē*) के लिए शब्द का अनुवाद KJV में ''नियम'' हुआ है। इस उपयोग से हमें ''नया नियम'' शीर्षक मिलता है। यिर्मयाह 31 अध्याय से लिया गया हवाला ''नई'' वाचा या नियम की अवधारणा के लिए पृष्ठभूमि का मुख्य हवाला है।

''मध्यस्थ'' (*mesitēs*) शब्द का इस्तेमाल पहली सदी के प्रतिदिन के लेन–देन में उसके लिए होता था, जो ''बीच में'' खड़ा हो। ऐसा व्यक्ति पंच या मध्यस्थ होता था।[14] मूसा ने पुरानी वाचा के अधीन मध्यस्था का काम किया (देखें गलातियों 3:19), परन्तु आज हमारा एक

मध्यस्थ यीशु मसीह है (1 तीमुथियुस 2:5)। हमारे लिए संतों, मरियम, स्वर्गदूतों या किसी भी अन्य के द्वारा पिता तक पहुंचने के लिए जाना अनावश्यक है।

आयत 7. मसीह की सेवकाई में नई वाचा, कलीसिया और वास्तविक क्षमा सहित "स्वर्ग में की वस्तुएं" हैं (आयत 5)। पुरानी वाचा में पाप के विषय में कहने को बहुत कुछ था, परन्तु यह पापों की पूर्ण या वास्तविक क्षमा नहीं देती। इसी लिए व्यवस्था को निर्दोष नहीं पाया गया (देखें रोमियों 8:3)। यीशु "और भी उत्तम" सेवा देता है। 8:8-12 में विस्तार से बताया गया है कि यह कैसे हुआ। नई वाचा पाप की वास्तविक क्षमा देने की पेशकश करती है जबकि पुरानी वाचा का ध्यान रस्मी शुद्धता से था। पुरानी वाचा की प्रतिज्ञाएं इस जीवन के लिए थीं, परन्तु नई वाचा की प्रतिज्ञाएं भावी जीवन के लिए हैं। आज्ञा मानने वालों के लिए पुरानी वाचा देश में लम्बी उम्र, गिनती में बढ़ोतरी, फसल की बहुतायत, जातीय विशेषाधिकार, शान्ति और समृद्धि का आश्वासन देती थी। सबसे बढ़कर नया नियम अनन्त जीवन देने की पेशकश करता है, जिसका पुराने नियम में केवल संकेत है। यदि पुरानी वाचा "निर्दोष" होती तो हमें नई और उत्तम वाचा की आवश्यकता नहीं होनी थी।

उस वाचा के जैसी नहीं जिसे तोड़ दिया गया था (8:8, 9)

[8]पर वह उन पर दोष लगाकर कहता है,

कि प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आते हैं,
कि मैं इस्राएल के घराने के साथ,
यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा;
[9]यह उस वाचा के समान न होगी,
जो मैंने उनके बाप-दादों के साथ उस समय बान्धी थी,
जब मैं उसका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया,
क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे,
और मैंने उसकी सुधि न ली; प्रभु यही कहता है।

आयत 8. दूसरा, यह नई वाचा उस पुरानी वाचा के जैसी नहीं होनी थी जिसे परमेश्वर के लोगों द्वारा तोड़ दिया गया था। यहूदी विश्वासियों को लिखने वाला व्यक्ति उनके अपने पवित्र शास्त्र में से उद्धरण देने से बढ़कर और विश्वास दिलाने वाला तर्क नहीं दे सकता था। यिर्मयाह ने व्यवस्था के अधीन अपने लोगों की बेवफ़ाई को सीनै पर्वत पर दी गई वाचा के ठुकराए जाने के रूप में देखा। उसने परमेश्वर की व्यवस्था के इस ठुकराए जाने को एक जाति के रूप में इस्राएल के अन्त के प्रमुख कारण के रूप में देखा। बेशक परमेश्वर ने व्यवस्था को दोषयुक्त होने के लिए बनाया था और उसने इसमें दोष निकाला था; परन्तु उसने प्राचीन इस्राएल के लोगों में भी दोष निकाला था।

एक नई वाचा इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने दोनों को दी गई थी यानी उन्हें फिर

से लोगों के एक समूह के रूप में एक होना था। यह कलीसिया अर्थात एक देह की स्थापना से हुआ (इफिसियों 2:14–16)। परमेश्वर फूट नहीं चाहता; वह अपने सब लोगों को एक देह अर्थात एक कलीसिया में (इफिसियों 1:22, 23) अर्थात "आत्मिक इस्राएल" (गलातियों 6:16) में चाहता है। वह जानता है कि गुटों से झगड़ा और कड़वाहट ही बढ़ती है जो शैतान की सेवा करके संसार के मनपरिवर्तन के विरुद्ध एक बड़ी रुकावट बन जाती है (देखें यूहन्ना 17:20, 21)। नई[15] वाचा हर गुट और फूट को मिटाने के इरादे से दी गई थी। यह तथ्य कि नई वाचा की भविष्यवाणी की गई थी, इस बात को दिखाता है कि पुरानी वाचा में दोष थे; यदि पुरानी वाचा सिद्ध होती तो नई वाचा देने का कोई मतलब ही नहीं होना था।

आयत 8 इस तथ्य को कि नई वाचा की प्रतिज्ञा यिर्मयाह के द्वारा दी गई थी, पार कर जाती है और इस उद्धरण को इसके मूल स्रोत प्रभु की ओर से बताती है। वह ... कहता है, यूनानी धर्मशास्त्र में स्पष्ट नहीं है परन्तु लेखक के लिए परमेश्वर को प्रवक्ता के रूप में बताना सामान्य बात थी। यिर्मयाह 31:31–34 की भविष्यवाणी जिसे इब्रानियों 8:8–12 में उद्धृत किया गया, तब दी गई थी जब यहूदा दासता के दौरान बाबुल की तानाशाही में कष्ट भोग रहा था। लोग हैरान थे कि क्या वे कभी अपने देश को लौट सकेंगे भी या नहीं। उन्हें आशा दी गई थी (यिर्मयाह 31:17); क्योंकि न केवल उन्होंने घर लौटना था बल्कि उन्हें एक नई और उत्तम वाचा भी मिलनी थी।

यिर्मयाह ने माना, जैसे कि योशिय्याह राजा ने भी व्यवस्था को बहाल करने के लिए अपने आपको दे दिया (2 राजाओं 23:3) कि लोग उसके धर्मी नमूने को नहीं मानेंगे (यिर्मयाह 3:6–10)। राष्ट्रीय पश्चात्ताप न होने के कारण नई वाचा ने लोगों के साथ व्यवहार करने का एक अलग ढंग देना था। परमेश्वर ने व्यवस्था असफलता का सार रचा था (रोमियों 8:3); इसलिए यूदियों को उनके इतिहास ने ही सिद्धता की व्यवस्था की मांगों के अनुसार न जी पाने के लिए प्रभावित किया होगा।

नई वाचा "इस्राएल के घराने" और "यहूदा के घराने" दोनों के साथ बांधी जानी थी। बाइबल के अर्थ में "इस्राएल" चार ढंगों से लागू होता है:[16]

1. याकूब के लिए परमेश्वर के राजकुमार के रूप में (उत्पत्ति 32:28)।
2. याकूब की सब संतानों के लिए (निर्गमन 4:22)।
3. दस गोत्रों के लिए जिन्होंने यारोबाम की अगुआई में विद्रोह किया (1 राजाओं 12:19, 20)।
4. नई वाचा के अधीन हर मसीही के लिए (रोमियों 9:6; गलातियों 6:16)। यह वाचा सारे इस्राएल (सब यहूदियों) को दी जानी थी परन्तु यह उन सब जातियों और राष्ट्रों के लिए भी होनी थी, जिन्होंने इसे स्वीकार किया।

"इस्राएल का घराना" नई वाचा के अधीन "परमेश्वर का इस्राएल" बन गया (गलातियों 6:16)। इब्रानियों की पुस्तक में कहीं भी स्पष्ट कहा तो नहीं गया पर सारी मनुष्यजाति उसमें शामिल हो सकती है। सम्भवतया इसलिए कि लेखक को मसीही यहूदियों के बीच रह गई कुछ

पूर्वधारणाओं का ध्यान था। यीशु ने कहा था कि उसका लहू नई वाचा स्थापित करने के लिए बहाया जाना था (मत्ती 26:28)। बाद में उसने घोषणा की कि इसका प्रचार समस्त संसार में किया जाना था (लूका 24:46, 47; मरकुस 16:15; मत्ती 28:18-20)।

"यहूदा" का अर्थ "स्तुति" या "उसकी महिमा की जाए" था। यह लिआ से याकूब के पहले पुत्र के लिए (उत्पत्ति 29:35); फिर उसकी सब संतानों या उसके गोत्र के लिए (गिनती 1:7); और बाद में शिमोन और दान के कुछ लोगों के साथ-साथ यहूदा और बिन्यामीन के गोत्रों सहित राहोबाम के पीछे चलने वालों के लिए पहले लागू हुआ। दासता के बाद "यहूदी" ("यू-दाह" से लिया गया) यहूदी बनने वालों के साथ-साथ इस्राएल के किसी भी गोत्र को दिया गया नाम था। पौलुस द्वारा इसे मसीही लोगों के लिए भी लागू किया गया (रोमियों 2:29)। यिर्मयाह की भविष्यवाणी की अभिव्यक्ति परमेश्वर के सब लोगों अर्थात उनके लिए भी जिन्होंने आज्ञा मानकर उसके साथ नई वाचा के सम्बन्ध में प्रवेश किया था।

आयत 9. पुरानी वाचा तब दी गई थी जब परमेश्वर हाथ पकड़कर इस्राएलियों को मिस्र देश से **निकाल लाया** था। यहां भाषा एक पिता के अपने नन्हें बालक का हाथ पकड़कर ले जाने की कल्पना का सुझाव देती है। लोग कमज़ोर थे और मिस्र से निकलने के अयोग्य थे, जब तक परमेश्वर "जैसे, उनके हाथ में हाथ डालकर *उन्हें मिस्र देश में से निकालने के लिए लाया* जहां दास थे।"[17] परमेश्वर ने अपने लोगों को एक सिस्टम दिया जो आदर्श रूप में उस समय उनकी आत्मिक उन्नति के लिए सही था। पहले उन्हें पाप की प्रकृति का पता होना आवश्यक था। पुरानी वाचा पाप को दिखा सकती थी परन्तु व्यवस्था के द्वारा कोई भी धर्मी नहीं ठहर सकता था या उसका उद्धार नहीं हो सकता था (रोमियों 3:20; देखें गलातियों 3:19-21)। पापियों का उद्धार न कर पाने के कारण यह पापी लोगों की सबसे बड़ी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाई।

परमेश्वर ने इस्राएलियों में खोट पाई क्योंकि वे बार-बार उसकी व्यवस्था को तोड़ रहे थे: "वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे।" उसने वाचा में भी कमी पाई क्योंकि यह बार-बार दोषी ठहराती थी। वह अपने लोगों को दोष के भयदायक बोझ को सदा तक लेने का इच्छुक नहीं था चाहे दोष पुरानी व्यवस्था का आवश्यक प्रभाव था। परमेश्वर मनुष्य जाति को परेशान नहीं करना चाहता था, इस कारण उसने पुरानी वाचा की जगह नई वाचा दे दी। इसलिए कि पुरानी वाचा उसकी सनातन योजना नहीं थी। नई वाचा पुरानी वाचा के जैसी नहीं होनी थी।

जब परमेश्वर ने कहा, "इसलिए मैंने उनकी सुधि न ली," तो यह उनके उसकी वाचा को ठुकराने का स्वाभाविक परिणाम था। यह बात इस्राएल को बचाने की चिंता या दिलचस्पी की कमी का संकेत नहीं देती। परन्तु जब लोग परमेश्वर को पूरी तरह से त्याग देते हैं तो परमेश्वर भी उन्हें छोड़ देता है (देखें रोमियों 1:18, 24, 26, 28)।

मनों और हृदयों पर लिखी गई वाचा (8:10-12)

[10]फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद
इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है,
कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा,

और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा,
और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे।
[11]और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा,
कि तू प्रभु को पहचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।
[12]क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा,
और उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा।

आयत 10. तीसरा, यह नई वाचा परमेश्वर के लोगों के हृदयों पर लिखी जानी थी: ''मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा और उसे उनके हृदयों पर लिखूंगा।'' अपनी व्यवस्था को ''उनके मनों में'' और ''उनके हृदयों पर'' लिखकर परमेश्वर लोगों को नई वाचा को याद करने के लिए नहीं कह रहा था, चाहे उन्होंने काफ़ी हद तक पुरानी वाचा को याद किया हुआ था (व्यवस्थाविवरण 6:6-9)। दाऊद की तरह कुछ लोगों ने अपने हृदयों में इसे जमा कर लिया था (भजन संहिता 119:11)। वचन को याद करना इसे मानने की गारंटी नहीं है, चाहे याद करना निश्चय ही लाभकारी है। व्यवस्था को ''हृदयों में'' रखने का अर्थ हृदय का नयापन हो सकता है। हृदय में परमेश्वर की व्यवस्था हो वह उसमें आनन्दित होता है (भजन संहिता 1:1-3) और उसे मानना चाहता है; वह परमेश्वर की इच्छा से प्रेम करता है। हृदय में समझ और विश्वास के बिना कोई इस नई वाचा में नहीं आ सकता है।

पुरानी वाचा में बच्चे को वाचा को जानना और परमेश्वर को जानना सिखाया जाना आवश्यक था। परमेश्वर की वाचा के कुछ लोग ही उनकी शिक्षाओं को दिल से नहीं लेते थे। यह एक विशेष व्यवहार की आवश्यकता का संकेत देता है, जैसे व्यवहार को अपनाने की अपील पौलुस ने फिलिप्पी के मसीही लोगों से की ''वैसा ही [मसीह के मन जैसा] तुम्हारा भी स्वभाव हो'' (फिलिप्पियों 2:5-11)। मसीही लोगों का स्वभाव मसीह के अधीन होने के स्वभाव के जैसा हो। इस नये स्वभाव करके नई वाचा के लोग इसकी आज्ञा मानना चाहते हैं। हमारे आज्ञा मानने से यह हमारे लिए और भी कीमती होने लगता है। एक सिद्ध मसीही प्रेम के कारण आज्ञा मानता है न कि इसलिए कि उसके लिए मानना आवश्यक है। यह उसके स्वभाव का भाग बन जाता है; क्योंकि उसके हृदय में इसे रोपा जाता है।

नये हृदय या आत्मा की अवधारणा यहेजकेल में भी मिलती है (देखें यहेजकेल 11:19, 20), जहां धर्मशास्त्र यह संकेत देता है कि इस प्रकार से वाचा को बांधने वाला व्यक्ति पूर्ण आज्ञापालन में पहुंच जाता है। यह विचार बाबुल की दासता से यहूदियों के लौटने से जुड़ा हुआ था। इस्राएल ने व्यवस्था को मानने का वचन भी दिया था (निर्गमन 24:7), परन्तु अपने नेक इरादे से मेल खाने के लिए उन्होंने हृदय की नैतिक शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया।[18] ''शरीर के कारण'' कमज़ोरी थी (रोमियों 8:3)। दाऊद ने चाहे परमेश्वर की व्यवस्था को अपने हृदय में रखा था (भजन संहिता 119:11) पर फिर भी वह इसे पूरी तरह से पूरा नहीं कर पाया। इसलिए इस अभिव्यक्ति का अर्थ व्यवस्था को केवल ''स्वाभाविक बनाने से बढ़कर है।[19] यीशु ने पहाड़ी उपदेश में पुरानी वाचा में परमेश्वर की मंशा को सही ढंग से समझाना चाहा। उनके लिए राज्य में प्रवेश करने के लिए उनकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों के लिए बाहरी और रस्मी

धार्मिकता से बढ़कर होनी आवश्यक थी (मत्ती 5:20)।

''सामर्थ'' परमेश्वर की नई वाचा की आज्ञा मानने के किसी के हृदय के पूरे समर्पण से आती है। उस सामर्थ का और अधिक माप नवजात शिशु की तरह जो दूध के लिए किलकारियां मारता है वचन की लालसा रखकर और इस प्रकार उद्धार के लिए बढ़ाई जा सकती है (1 पतरस 2:1, 2)।

मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा का अर्थ है कि हर व्यक्ति व्यक्तिगत रूप में परमेश्वर के पास आ सकता था। पुरानी वाचा परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में एक बड़ा अन्तर डालती थी, जैसा कि तम्बू के पर्दे से दिखाया जाता है। नई वाचा के अधीन हम सीधे उस तक पहुंच सकते हैं, क्योंकि वह हमारा परमेश्वर है और हम उसके लोग, यानी उसका परिवार हैं। पुरानी वाचा के अधीन एक यथार्थ वर्ग सिस्टम था जिसके द्वारा याजकों को सामान्य लोगों से बहुत ऊंचा माना जाता था। परमेश्वर के राज्य के सभी लोग पुराने नियम के याजक के बराबर हैं।

एक अर्थ में इस्राएली परमेश्वर को जानते थे क्योंकि उसने अपने आपको उनके ऊपर प्रकट किया था। उसने घोषणा की, ''मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरे लोग होंगे।'' उसकी शर्तों को ठुकराना या उन्हें पूरा न कर पाना परमेश्वर को न जानने के बराबर था (देखें न्यायियों 2:10)। परमेश्वर को जानने के लिए उसे ''अपना परामर्श दाता, अपना रक्षक, अपना छुड़ाने वाला, अपना अगुआ'' मानना आवश्यक था।[20] होशे ने लोगों के अनैतिक जीवन को परमेश्वर को न जानने के बराबर माना (होशे 4:1-3)। यही सिद्धांत नये नियम में भी है। पापपूर्ण जीवन-शैली को सही ढंग से ''मसीह की शिक्षा'' न होना बताया गया है:

> *पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई* वरन तुम ने सचमुच उसी की सुनी, और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए। कि तुम अगले चाल-चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है (इफिसियों 4:20-24)।

अपने हृदयों को बदलने की ज़िम्मेदारी इफिसियों की थी! यदि वे सही समझ गए होते और मसीह की शिक्षा को उन्होंने लागू किया होता तो उनके ''मन के आत्मिक स्वभाव ... नये'' हो जाने थे (4:23)। स्पष्टतया यदि उनके मन पहले ऐसे थे तो उन्हें इसे प्रज्वलित करने की आवश्यकता थी। ऐसा इफिसियों 5:18 की आज्ञा को मानकर किया जा सकता था: ''और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इस से लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।'' यदि कोई हृदय से परमेश्वर से प्रेम करता है तो वह पाप करके उसका दिल दुखाना नहीं चाहेगा।

आयत 11. ''और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।'' नई वाचा में आने के लिए व्यक्ति को सचमुच में बदलना आवश्यक है जबकि पुरानी वाचा में बच्चा शरीर से जन्म लेता था। इस कारण पुरानी वाचा को मानना व्यक्तिगत समर्पण के बजाय पारिवारिक या जातीय प्रथा अधिक थी। पुरानी वाचा मुख्यतया इस्राएली लोगों के लिए थी, परन्तु नई वाचा सब जातियों

के लोगों के लिए है, चाहे लोग यहूदी हों या अन्यजाति। कुछ लोग यह मान लेते हैं कि अपने माता-पिता के विश्वास के द्वारा बच्चा राज्य में प्रवेश कर सकता है। माता-पिता ने बच्चे का "बपतिस्मा" (आम तौर पर छिड़काव) करवाया हो सकता है जिसका परिणाम यह हो सकता है कि बच्चा कभी भी मनपरिवर्तन या आज्ञापालन की आवश्यकता को देख नहीं पाता। पुरानी वाचा में जन्मे व्यक्ति को परमेश्वर को जानने के लिए दिखाया जाना आवश्यक था (आयत 11), नई वाचा में इसके उलट है! व्यक्ति "विश्वास से सुन" कर परमेश्वर को जानने लगता है (गलातियों 3:2)। "जल और आत्मा" से जन्म सहित "नये जन्म" के द्वारा निजी विश्वास और आज्ञापालन आवश्यक है (यूहन्ना 3:5; 1 पतरस 1:23; देखें 1 कुरिन्थियों 4:15)। इब्रानियों 8:8-12 लगभग संयोग से परन्तु प्रभावशाली ढंग से नवजात शिशुओं के बपतिस्मे को खारिज कर देती है क्योंकि यह प्रथा नये व्यक्ति को फिर से पुराना बना देगी, जिसके अधीन वाचा में उसका जन्म होता था और फिर बाद में उसे "प्रभु को जानने" के लिए सिखाया जाना आवश्यक था। मसीही युग में नई वाचा में प्रवेश करने के लिए सुसमाचार को सुनकर और परमेश्वर की शर्तों को मानकर "प्रभु को जानना" आवश्यक है। यीशु में विश्वास करने के लिए मन फिराकर सही "शिक्षा के ढांचे" को दिल से मानने, मसीह का अंगीकार करने और बपतिस्मे में उसके साथ दफ़नाए जाकर परमेश्वर की शर्तों को समझना आवश्यक है (रोमियों 6:17, 18)।

"क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जान लेंगे।" राज्य के लोगों को अपने साथी नागरिकों को यह सिखाने की आवश्यकता नहीं है कि "प्रभु को पहचान।" परमेश्वर ने कहा, "क्योंकि सब मुझे जान लेंगे" नहीं तो उन्होंने मसीह के राज्य में नहीं होना था। परमेश्वर की इच्छा हमारे हृदयों और मनों में शिक्षा के द्वारा डाली जाती है। यीशु ने कहा कि उसके द्वारा परमेश्वर के पास आने वाले सब लोगों को पहले सिखाया जाना आवश्यक है (यूहन्ना 6:44, 45)। विश्वास केवल "वचन को सुनने" से आता है (रोमियों 10:17)।

आयत 12. अब हमारी सबसे बड़ी आशीष यह होगी: मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरणन करूंगा। पहली वाचा में वास्तविक क्षमा की कमी थी (इब्रानियों 9:9; 10:1, 2, 11)। यह रस्मी तौर पर किए गए अपराधों से निपटती थी, परन्तु "यह हृदय और जीवन की शुद्धता को कैसे प्रभावित कर सकती थी?"[21] "पुराने नियम के बलिदान पापों का *स्मरण* कराते थे न कि पापों की *क्षमा* दिलाते थे (इब्रानियों 10:1-3, 18)।"[22] कोई व्यक्ति संस्कारों में सही हो सकता था जबकि दिल में गलत पर फिर भी उसे दूसरों के मानने में धर्मी ही माना जाता था (लूका 18:9-14)। व्यवस्था की रस्में आत्मिक सच्चाइयों की सही समझ नहीं दिलाती क्योंकि इसके कायदे पाप के प्रति परमेश्वर की असहिष्णुता को दिखाने के लिए थे। इसकी रस्में अधिकतर यहूदियों के लिए केवल रस्में ही बन गई थीं। अब पापों के वार्षिक स्मरण के बजाय (इब्रानियों 10:1, 2) हमें प्रभु भोज में गम्भीरता से भाग लेते हुए अपने पापों के पूरी तरह से मिटाए जाने का साप्ताहिक यादगार दी गई है (मत्ती 26:28)। मसीह में परमेश्वर हमसे ऐसे व्यवहार करता है जैसे हम ने कभी पाप किया ही न हो। हमारी क्षमा का आधार पुरानी वाचा की तरह हमारा मन फिराव नहीं बल्कि मसीह का बलिदान है (रोमियों 8:33, 34)। परन्तु मन फिराव अभी भी आवश्यक है (लूका 13:3, 5)। मसीह में प्रायश्चित करके माने जाने वाले पाप को एक ओर कर दिया जाएगा (1 यूहन्ना 1:7-10)।

क्या परमेश्वर हमारे पापों को भूल सकता है ? निश्चय ही इसका अर्थ यह है कि वह हमारे दोष को रिकॉर्ड से पोंछ देगा और उन पापों को फिर कभी हमारे विरुद्ध नहीं लाएगा। जो व्यक्ति कहता है, ''मैं क्षमा करूंगा, परन्तु जो तू ने किया है उसे कभी भूलूंगा नहीं'' उसने वैसे क्षमा नहीं किया है, जैसे परमेश्वर करता है।

वाचा जो कभी पुरानी नहीं होती (8:13)

[13]नई वाचा की स्थापना से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है, उसका मिट जाना अनिवार्य है।

आयत 13. चौथा, यह नई वाचा कभी पुरानी नहीं होगी। परमेश्वर ने नई वाचा स्थापित करने पर प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया; और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है।

''नई वाचा'' शब्दों से ही पहली वाचा के पुरानी और चलन से बाहर होने का पता चलता है। 2 कुरिन्थियों 3:6, 14 में पौलुस ने पिछली वाचा के सम्बन्ध में ''पुराना'' शब्द का इस्तेमाल किया। पहली वाचा को ''पुराना'' बनाने का अर्थ था कि इसकी ''अब आवश्यकता नहीं थी'' जो कि इसके मिट जाने पर सब को पता चल जाना था। यह मिट जाना (अलोप होना) होने वाला था। क्योंकि पुरानी वाचा बूढ़ी होकर मर रही थी। NEB में है ''... जो भी पुराना और बूढ़ा हो रहा होता है, जल्द ही अलोप हो जाएगा।'' ''जीर्ण'' के लिए यूनानी शब्द (*aphanismos*) उसी शब्द से लिया गया है, जिससे ''मिट जाने'' के लिए शब्द, जिसका इस्तेमाल याकूब 4:14 में भाप के लिए किया गया है, जो दिखाई देती है और फिर अचानक गायब हो जाती है।

पुरानी वाचा को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया है। मत्ती 5:17, 18 में यीशु ने इसका संकेत दिया। क्रूस पर उसने घोषणा की, ''पूरा हुआ!'' (यूहन्ना 19:30), जिसका अर्थ निश्चित रूप में इससे बढ़कर था, ''मेरा जीवन खत्म हुआ।'' यूहन्ना 17:4 में यीशु ने अपने पिता को बताया था कि उसने उस काम को जो उसे दिया गया था ''पूरा'' कर दिया है। परमेश्वर द्वारा दिए और स्वीकृत किए गए धार्मिक सिस्टम के रूप में यहूदी मत का मसीह की मृत्यु के साथ अन्त हो गया।

परन्तु मन्दिर में केन्द्रित और लम्बे समय से पवित्र माने जाने वाले सिस्टम के रूप में यहूदी मत को चालीस और वर्षों तक रहने दिया गया। मानवीय दृष्टिकोण से इसने 70 ईस्वी में मिट जाना था, जब रोमी सेना ने पत्थर पर पत्थर नहीं रहने देना था (मत्ती 24:2)। यीशु ने मन्दिर के इस विनाश की भविष्यवाणी की थी (मरकुस 13:2), और स्तिफनुस ने इसके अन्त की घोषणा कर दी थी (देखें प्रेरितों 6:14)। नये नियम में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि मन्दिर को फिर से बनाया जाएगा और लेवीय बलिदानों को फिर से आरम्भ किया जाएगा। यह सब पृथ्वी से सदा के लिए जा चुके हैं। यहूदी मत का अवशेष या परछाई जो आज है वह केवल पुरानी वाचा का खोल है। मन्दिर को फिर से बनाना पूरी नई वाचा को निकालने का प्रयास होगा जिससे मसीह के द्वारा हमें छुड़ाया जाता है। यह उत्तम से निकम्मे की ओर उल्टा जाना होगा।

ऐसा महायाजक (8:1)

कुछ यहूदियों ने कहा होगा, ''हम अपने महायाजक को काम करते हुए देख सकते हैं, और तुम्हारे याजक को तो कभी किसी ने देखा नहीं है। तुम कैसे जानते हो कि सचमुच में कोई तुम्हारा याजक है भी?'' मसीह की महायाजकाई मसीही व्यक्ति के लिए विश्वास की बात है। इसे परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक द्वारा प्रकट किया गया है इस कारण हम इस पर विश्वास कर सकते हैं। बेहतरीन उत्तर कुएकर द्वारा किसी संदेहवादी को दिए गए उत्तर जैसा हो सकता है जिसने पूछा था कि जब वह परमेश्वर को देख नहीं सकता तो वह उसमें विश्वास कैसे कर सकता है। उसका उत्तर था, ''क्या आपने अपना दिमाग देखा है? नहीं? तो फिर आप कैसे जानते हो कि आपके पास दिमाग है?'' हमारे पास अपने विश्वास और अपने महायाजक में विश्वास का प्रमाण वैसे ही है, जैसे संदेहवादी को विश्वास है कि उसके पास दिमाग है। अध्याय 7 समझाता है कि हमें एक नई वाचा मिली है, जिस कारण हमारा याजक मनुष्यों द्वारा दिखाई देने के लिए पृथ्वी पर सेवा नहीं करता है। वह अलग गोत्र यानी यहूदा के गोत्र में से है और इस कारण वह महायाजक के रूप में सेवा नहीं कर सकता था। वह हमारे देखने से आगे सेवा करता है परन्तु एक दिन हम उसे देखेंगे। वह स्वर्ग के असली तम्बू में सेवा कर रहा है न कि पृथ्वी के शारीरिक तम्बू में।

यह यीशु कौन है? (8:1)

इब्रानियों की पुस्तक में हम यीशु को अपने ऊंचे किए गए प्रभु, याजक और राजा के रूप में देखते हैं। कुछ लोग मसीह को पाना चाहते हैं परन्तु वे उसे छोटे किए गए रूप में नहीं चाहते। वे प्रेमी मसीहा को चाहते हैं, जो किसी प्रकार की कोई मांग न रखे। वह क्रूस उठाने को न कहे या उसे अपने जीवनों का पूर्ण बलिदान देने को न कहे। उन्हें एक उद्धारकर्त्ता चाहिए परन्तु वह नहीं जो नैतिकता के स्पष्ट नियम बताए। बहुतों के लिए मसीह ''सुपरस्टार'' है, परन्तु परमेश्वर का क्रोध नहीं जो पाप को डांटता और कारोबारियों को निकाल देता है। आज की अधिकतर शिक्षा में, ''ऐसा लग सकता है जैसे मसीह का प्रचार किया जा रहा है, परन्तु है नहीं।''[23] जब तक हम इस जीवन में आचरण के ढंग के लिए उसके अधिकार और उसके निर्देश को मानकर मसीह की ओर नहीं मुड़ते तब तक हम उसकी ओर बिल्कुल नहीं मुड़ रहे हैं।

स्वर्ग में बैठा (8:1)

यीशु अब परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा (राज कर रहा) है। पतरस ने कहा कि उसे दाऊद की गद्दी पर बिठाने के लिए जिलाया गया था (प्रेरितों 2:30–33)। यह उस ''शाख'' की जकर्याह की भविष्यवाणी का पूरा होना है जिसने राजा और याजक के रूप में राज करना था (जकर्याह 6:12, 13)। विचार की सहशत्राब्दी पाठशाला का कहना है कि मसीह वर्तमान ''कलीसिया का युग'' में राज नहीं कर रहा है। इसके विपरीत पतरस और इब्रानियों की पुस्तक दोनों अब उसे राज करते हुए दिखाते हैं। ''कलीसिया का युग'' नये नियम के मसीह के राज्य से अलग नहीं। हम कलीसिया को राज्य की वर्तमान ''प्रदर्शन'' के रूप में नहीं मानते हैं, परन्तु

उद्धार पाए हुए सभी लोगों को कलीसिया में मिलाया जाता है (प्रेरितों 2:47) और उन्हें राज्य में पाप से छुड़ाया जाता है (कुलुस्सियों 1:13, 14), इस कारण इनमें कोई व्यवहारिक अन्तर नहीं है।

जीवित बलिदान (8:3)

हमें अपने शरीरों के ''जीवित बलिदान'' चढ़ाने आवश्यक हैं (रोमियों 12:1, 2), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि ''पूरा जीवन आराधना ही है।'' परमेश्वर की आराधना उसके ठहराए हुए ढंग से होनी आवश्यक है। बच्चा अपने पिता का आदर अपने तरीके से करके उसे प्रसन्न नहीं करता है, बल्कि ऐसा वह अपने पिता के सिखाए हुए ढंग से जीवन बिताकर करता है। स्वर्गीय पिता की हमारी आराधना वैसी ही है। परमेश्वर जैसी भी हो आराधना को स्वीकार नहीं करता। उसने हाबिल की स्वीकार्य आराधना और कैन की अस्वीकार्य भेंट में स्पष्ट अन्तर किया (उत्पत्ति 4:1-5; इब्रानियों 11:4)। हाबिल ने ''विश्वास से'' भेंट लाई जिसका अर्थ है कि उसे मालूम था कि परमेश्वर ने क्या अधिकृत किया है और उसे चौकसी के साथ माना (रोमियों 10:17)। हाबिल किसी भी चीज़ को चुन सकता था, जैसे परमेश्वर का सम्मान करने के लिए कोई मूर्ति बनाकर; परन्तु परमेश्वर ने ऐसे बलिदान को जिसे उसने अधिकृत नहीं किया था, स्वीकार नहीं करना था।

क्या हम अपनी पसन्द के अनुसार अपनी सोच से ''दानों'' का इस्तेमाल करके परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं? मान लीजिए कि एक कुशल सब्जी बोने वाला किसान अपनी आराधना की तरह पौधे उगाने के अपने ढंग का इस्तेमाल करना चाहे तो क्या वह मण्डली में किया जा सकता है? जब परमेश्वर ने एक ढंग को अधिकृत कर दिया है तो हम लिखे हुए से आगे न जाएं (1 कुरिन्थियों 4:6)। मसीह में हमारी स्वतन्त्रता (गलातियों 5:1) हमें इतनी दूर जाने की छूट नहीं देती है। नई वाचा हमें व्यवस्था से स्वतन्त्र करती है, परन्तु यह हमें परमेश्वर की स्पष्ट इच्छा को न मानकर हमें पाप से मुक्त नहीं करती है।

न ही इस हवाले का तात्पर्य यह है कि मसीह बलिदान करता रहता है। मसीह हमारे लिए निवेदन करने वाले याजक के रूप में काम करता रहता है, परन्तु बलिदान देते रहने वाले याजक के रूप में नहीं। बलिदान देने का उसका काम दोहराया नहीं जाता (इब्रानियों 9:28)। मसीह के पास भेंट के लिए कुछ था (आयत 3), परन्तु उसके द्वारा प्रतिदिन बलिदान दिए जाने की आवश्यकता नहीं थी।

नमूने के अनुसार (8:5)

बाइबल कई बार ''नमूनों'' की बात करती है। उपदेश का *सांचा* जिसे माना जाना आवश्यक है, मसीही लोगों को पाप से स्वतन्त्रता की ओर ले जाता है। रोमियों 6:17, 18 इस बात की गारंटी देता है कि रोमी मसीही लोगों को पाप से छुड़ाया गया था *जब* उन्होंने ''मन से उस उपदेश के सांचे'' को माना था। इस ''सांचे'' में कोई न कोई *नमूना* होना आवश्यक है। सुसमाचार अच्छा और महिमायुक्त समाचार है, परन्तु सुसमाचार में मानने के लिए कौन सा ''सांचा'' है? रोमियों 6:3, 4 में इन भाइयों के मसीह और उसकी मृत्यु में प्रवेश करने के समय की बात करके पौलुस

ने पहले ही इसे समझा दिया था। यह बपतिस्मे के समय हुआ था। मरने, दफ़नाए जाने और जिलाए जाने का *सांचा* फिर से मसीह में डुबकी के कार्य में लाया गया था। सांचे की आज्ञा मानना आवश्यक है क्योंकि "मसीह में" उद्धार के क्षेत्र में आज्ञा मानते हुए ऐसे ही प्रवेश किया जाता है और उसकी मृत्यु के लाभों के भागीदार बना जाता है (रोमियों 6:4)। इसके बाद व्यक्ति नये जीवन में चलने के लिए जिलाया जाता है (रोमियों 6:5), जो नये जन्म का कारण बनता है। यह सब तब होता है जब कोई पवित्र आत्मा की शिक्षा के अपने आरम्भिक आज्ञापालन को पूरा करता है। यह बात पवित्र आत्मा के बपतिस्मे पर लागू नहीं हो सकती क्योंकि बपतिस्मा लेने वाले को बपतिस्मे से जिलाए जाने की बात कही गई है (रोमियों 6:4, 5), जिसका अर्थ केवल जल रूपी कब्र में से ऊपर आना हो सकता है। व्यक्ति "आत्मा के बपतिस्मे" से नहीं जिलाया जाता जो कि यह बताने का एक प्रतीकात्मक ढंग है कि प्रेरितों को उसके द्वारा कैसे सामर्थ दी जाती थी।

"नमूना" के लिए हर बात विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए क्या प्रेरित लोगों को मुंह नीचे की ओर करके या सिर पीछे की ओर करके बपतिस्मा देते थे? क्या बपतिस्मा लेने वाले को पानी में लुढ़काया जाता था? कुछ बातें हैं जो स्पष्ट नहीं की गई, परन्तु डुबकी तो होती थी क्योंकि *baptisma* का अर्थ यही होता है। मूसा, नूह और अन्य लोगों द्वारा कठोर आज्ञापालन का नियम हमारे ऊपर भी लागू होता है।

कुछ लोग नये नियम के नमूने का अधिकार होने पर आपत्ति क्यों करते हैं? कुछ लोग कहते हैं, "कोई कठोर नियम नहीं है।" यदि कोई नमूना है तो इसे थोड़ी कठोरता से मानना आवश्यक है? क्या बपतिस्मा डुबकी से होता है? क्या बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए है? प्रेरितों 2:38 और 22:16 पढ़ें। प्रभु की कलीसिया के अधिकतर लोग मानते हैं कि हां और इस बात से सहमत हैं कि हम इस बात पर समझौता नहीं कर सकते या हार नहीं मान सकते।

बिना नमूने के, नये नियम की मसीहियत को बहाल करने के अधिकार का कोई आधार नहीं होना था। यदि कोई ठोस शिक्षा की शुद्धता नहीं मिल सकती तो कठोर मानकों वाली नैतिक शुद्धता भी नही हो सकती।

एक उत्तम वाचा (8:6)

जब यीशु ने कहा कि उसका लहू नये नियम या वाचा को लागू कर रहा है (मत्ती 26:28) तो वह बिना किसी संदेह के निर्गमन 24:8 में मूसा की शब्दावली का इस्तेमाल कर रहा था: "देखो, यह उस वाचा का लोहू है जिसे यहोवा ने इन सब वचनों पर तुम्हारे साथ बान्धी है।"

इसके साथ ही यीशु ने स्पष्ट और जानबूझकर अन्तर किया, क्योंकि उसने "पापों की क्षमा के लिए" शब्दों को जोड़ दिया। मूसा ने पशु का लहू इस्तेमाल किया था जबकि प्रभु भोज में यीशु ने अपने स्वयं के लहू को जो अगले दिन बहाया जाना था, दर्शाने के लिए "दाख का रस" इस्तेमाल किया (मत्ती 26:29)। मूसा ने व्यवस्था की वाचा की बात कही थी जबकि यीशु ने अनुग्रह, प्रेम और दया की वाचा की बात की। मूसा ने पापों के आंशिक रूप में क्षमा होने की बात बताई ताकि परमेश्वर अपने लोगों के साथ रह सके; यीशु ने पापों की वास्तविक और पूर्ण क्षमा दी ताकि परमेश्वर अलग ढंग से अपने लोगों के बीच में रह सके।[24]

नई वाचा की उत्तम बात क्या है?[25] मेल कराने वाली। यह परमेश्वर के सब लोगों को एक

देह में इकट्ठा करती है (इफिसियों 2:14-18)। यह हमें अपने हृदयों के अन्दर से प्रेरणा लेने देकर भीतर से जहां व्यक्ति के राज्य में होने और नई वाचा के लाभों की कटनी के लिए वचन का होना आवश्यक है, भीतरी है। यह सारी मनुष्यजाति को मसीह में परमेश्वर की दया के शामियाने के नीचे लाने के लिए बनाई गई होने के कारण, विश्वव्यापी है (मत्ती 28:18-20)। यह इस बात में उदार है कि यह सब को क्षमा की पेशकश करती है (इब्रानियों 2:9)। अन्त में यह स्थाई है क्योंकि हमें आश्वस्त किया गया है कि यह सदा तक रहेगी। यह कभी पुरानी या अप्रचलित नहीं होगी।

नई वाचा (8:7)

नई वाचा के सम्बन्ध में कई महत्वपूर्ण सच्चाइयों को देखा जाना चाहिए:[26]

1. *यह आश्वासन की वाचा है।* यह हमें आश्वस्त करती है कि परमेश्वर हमारा परमेश्वर है और हम उसके लोग हैं (आयत 10)। यह हमें आश्वस्त करती है कि जब हम उसके साथ इस वाचा में जुड़े हैं, तो वह हमारे पापों को भूल जाता है (आयत 12)। यह सच है क्योंकि 8:10-12 में परमेश्वर ने छह बार कहा है, "मैं करूंगा!" हम भरोसा कर सकते हैं कि वह जो उसने कहा है, उसे पूरा करेगा।

2. *यह आज्ञापालन की वाचा है।* परमेश्वर अपना काम करता है परन्तु हमें भी ठहराई हुई शर्तों को पूरा करके अपना योगदान देना आवश्यक है। "वाचा" के लिए शब्द (*diathēkē*) किसी बड़े का सुझाव देता है जो ग्रहण करने के लिए पेशकश और माने जाने के लिए शर्तें देता है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने विशेष लोग बनाने की प्रतिज्ञा की (निर्गमन 19:5, 6), जो कि उसने मसीही लोगों के लिए भी किया है (तीतुस 2:14; 1 पतरस 2:5, 9)। उसके नियम अब हमारे हृदयों के अन्दर लिखे गए हैं, परन्तु इसका क्या अर्थ है? हमें दिल से परमेश्वर की आज्ञा माननी आवश्यक है। यदि परमेश्वर की व्यवस्था हमारे अन्दर है तो हम इसे पूरा कर सकते हैं (व्यवस्थाविवरण 30:11-14; यहेजकेल 11:19, 20; भजन संहिता 40:6-8)। यहूदी लोग अपनी परम्पराओं को बढ़ाते हुए व्यवस्था को दूर रखते थे। मूल में, उन्होंने लोगों को व्यवस्था को तोड़ने से रोकने के लिए रक्षात्मक रुकावट के रूप में इन परम्पराओं को चाहा था, परन्तु उनकी परम्पराएं उनके लिए व्यवस्था से अधिक बहुमूल्य बन गईं (देखें मत्ती 15:5-9)। परमेश्वर को जानने का अर्थ उसकी इच्छा को मानना है। होशे ने दुष्ट इस्राएलियों पर परमेश्वर को न जानने का आरोप लगाया; उस जाति ने ध्यान की कमी के कारण नष्ट हो जाना था (होशे 4:1, 2, 6)। यिर्मयाह ने भी घोषणा की कि परमेश्वर को जानने का अर्थ न्याय और धार्मिकता के काम करना है; परमेश्वर को न जानना निर्दोषों के लहू बहाने और कमज़ोरों का दमन करने में सिखाया हुआ था (यिर्मयाह 22:15-17)। आज किसी को भी वास्तव में परमेश्वर का ज्ञान तब तक नहीं है जब तक उसने सुसमाचार को नहीं माना है (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10)।

3. *यह अनुग्रह की वाचा है।* सबसे बढ़कर परमेश्वर हमारे साथ "दयावंत" है (आयत 12)। उसकी दया क्षमा की उसकी पेशकश से साबित हो चुकी है। नये नियम की मुख्य बात यही है (देखें 10:16-18; मत्ती 26:28)।

4. *यह स्थाई वाचा है।* पुरानी वाचा पुरानी थी और इस पत्री के लिखे जाने के शीघ्र बाद

मिट जाने वाली थी (इब्रानियों 8:13)। ''जीर्ण हो जाती'' वाक्यांश (वर्तमान कृदंत) संकेत देता है कि पुराना सिस्टम इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने के समय तक प्रभावी था, परन्तु शीघ्र ही यह ''जीर्ण'' (कृदंत के द्वारा व्यक्त किया गया, पूर्ण हुआ कार्य) था। यह दोनों कैसे हो सकता है? मसीह नई वाचा के अधीन महायाजक के रूप में पहले से सक्रिय था; परन्तु मन्दिर अपनी ठण्डी पड़ रही सेवाओं के साथ अभी खत्म नहीं हुआ है। यह आयत 70 ईस्वी में यरूशलेम के होने वाले विनाश के सम्बन्ध में होगी।

इस्राएल और यहूदा (8:8)

सहस्त्राबदी यानी हज़ार वर्ष के राज्य का अनुमान लगाने वाले कुछ लोगों की कल्पना है कि नई वाचा अभी दी नहीं गई है क्योंकि इस्राएल और यहूदा के शारीरिक राज्य की बहाली पूरी तरह से नहीं हुई है। यदि नई वाचा में यह आवश्यक होता तो हमारे समय में पापों की पूरी क्षमा में हमारा भरोसा खत्म हो जाता। यदि यिर्मयाह 31:31–34 की भविष्यवाणी की एक बात मसीह की नई वाचा में जिसका आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था, पूरी नहीं हुई (प्रेरितों 2) तो कोई भी बात पूरी नहीं हुई। यह पूरी *हो चुकी* है और मसीही लोगों को कलीसिया में पापों की पूरी क्षमा मिली है। क्षमा और नई वाचा साथ-साथ चलते हैं। यह कल्पना करना कि नई वाचा मसीह की मृत्यु के दो हज़ार वर्ष या उससे अधिक तक रहेगी किसी को इब्रानियों की पत्री पढ़कर यहूदी वाद को छोड़कर विश्वास में कमज़ोर लोगों को समझाने में सहायक नहीं होनी थी। यह सच्चाई कि आने वाली नई वाचा की भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है किसी के लिए भी जो इब्रानियों 8—10 को निष्पक्ष रूप में सुनता है, स्पष्ट है। नई वाचा ही जीवन यीशु के लिए जीना बेहतर बनाती है।

यहूदा और इस्राएल आज परमेश्वर के सब लोगों के लिए स्पष्ट प्रतीक हैं। हम मसीह और कलीसिया के द्वारा परमेश्वर के साथ नई वाचा के सम्बन्ध में जुड़े हैं (8:8)।

विश्वासयोग्य शिक्षा (8:8, 9)

जब हम लोगों को मसीह तक ले जाना चाहते हैं तो जैसे इब्रानियों की पुस्तक भी करती है–तो वहीं से आरम्भ करें जहां लोग हैं। यदि कोई यहूदी पुराने नियम के पवित्र शास्त्र में विश्वास रखता है तो हमें वहीं से आरम्भ करना चाहिए, जैसे खोजे के साथ फिलिप्पुस ने किया था: ''तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला और *इसी शास्त्र* से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 8:35)। जैसा कि यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी, यहूदी लोग पूरे संसार में बिखरे हुए थे (यिर्मयाह 9:16)। अपने पवित्र शास्त्र के साथ वे मसीह की जीवित गवाही का काम करते हैं। यह दिखाने के लिए कि यहूदी बाइबल जिसे मसीही धर्मशास्त्र से अलग सम्भालकर रखा गया है, उस उद्देश्य को पूरा करती है, हम पुराने नियम का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसा प्रमाण बहुतों को मसीह की ओर मुड़ने के लिए समझा सकता है। दूसरों के पास अपने विश्वास और लेखों के लिए ऐसी पक्की पुष्टि नहीं है, जैसे मसीही लोगों के पास है। हमारे पास अपना जी उठा प्रभु और पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के पूरा होने का नये नियम का समर्थ है। अपनी पवित्र पुस्तक के साथ यहूदी लोग मसीह की गवाही देते रहेंगे। वे विश्वास के सहायक

के रूप में इस संसार में हर जगह पाए जाते हैं। पुराना नियम हमें सांत्वना और शिक्षा देता रहता है (रोमियों 15:4; 1 कुरिन्थियों 10:11; गलातियों 3:24)।

हृदय पर लिखा हुआ (8:10)

कुछ लोग यह दावा करते हैं कि 8:10 मसीही व्यक्ति को पाप पर पूरी तरह काबू पाने के योग्य बनाकर पवित्र आत्मा के सीधे काम के द्वारा हृदय में नई शक्ति देता है। यदि हमारे अन्दर परमेश्वर के आत्मा के द्वारा पाप पर काबू पाने की विशेष सामर्थ डाली गई तो किसी मसीही के सफल न होने पर यह आत्मा और उसकी सामर्थ लगेगा। क्या मनपरिवर्तन के समय हमें कोई ''ईश्वरीय स्वभाव'' मिलता है? कुछ लोग यह दावा करने के लिए 2 पतरस 1:2-4 का इस्तेमाल करते हैं, परन्तु पतरस ने यह नहीं कहा था। उसने घोषणा की कि हम ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी ''बन सकते हैं।'' यानी मसीही लोगों को उस स्वभाव में पूर्ण भागीदारी में बढ़ने के अवसर दिए जाते हैं। आत्मा मनुष्य के उत्तर को नकारता नहीं है। आत्मा मनुष्य के मन पर दबाव से कार्य नहीं करता है।

हम उसकी इच्छा को ''अपने हृदयों पर लिखा'' कैसे बनाते हैं? इस दृश्य की कल्पना करें। आप खोए-खोए स्कूल के पास से 35 किलोमीटर प्रति घण्टा की गति से गाड़ी चला रहे हैं कि दो खड़ी हुई कारों के बीच में से अचानक सात साल का एक लड़का सड़क पर आ जाता है। आप जल्दी से ब्रेक लगाते हैं- जब आप रुक जाते हैं, आपकी गाड़ी का बम्पर लड़के को लग जाता है। आपके पसीने छूट जाते हैं। आप के हाथों एक बच्चे ने मर जाना था! उस दिन के बाद से आप को सड़क पर से गुज़रते हुए यह लिखा हुआ देखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, ''आगे स्कूल है, गति सीमा 15 किलोमीटर प्रति घण्टा।'' यह नियम आपके हृदय पर लिखा जाएगा।[27]

''उनके हृदयों पर लिखूंगा'' का अर्थ है कि हम परमेश्वर की इच्छा को अपने जीवनों का केन्द्र बना लेते हैं, कि हम इसे अपनी हर पसन्द के साथ विचार करके और दिल से उसके प्रकाशन को मानते हैं। हम पत्थर पर लिखी किसी बात को नहीं मानते; बल्कि हमारे हृदय परमेश्वर और पिता से भर जाते हैं जिससे हम प्रेम करते हैं। जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो गीत गाना, आराधना करना और बाइबल क्लास में जाना हमारे लिए आनन्ददायिक और रोमांचकारी बन जाते हैं। पिता के पास जो सचमुच में परमेश्वर को जानने लगा है, की गई छोटी सी प्रार्थना भी खुशी के आंसू ले आती है। जब हम सचमुच में परमेश्वर को जानते और उससे प्रेम करते हैं तो हम उसे क्रोध करने वाले परमेश्वर के रूप में नहीं बल्कि प्रेमी पिता के रूप में देखेंगे। यह जानने के लिए कि परमेश्वर के सामने माना गया एक पाप उसकी किताब से तुरन्त मिटा दिया जाएगा, हम अत्यन्त भावुक हो जाएंगे। हमें रोमियों 8:31 पर पूरा विश्वास हो जाएगा जो कहता है कि परमेश्वर हमारी ओर है। आइए हम उसके वचन को अपने हृदयों पर लिख लें।

व्यवस्था जो उनके मनों में (8:10)

जो लोग यह सोचते हैं कि उनकी ''मसीह में स्वतन्त्रता'' हर प्रकार की व्यवस्था से दूर करके उन्हें उनसे रोकती है, बुरी तरह से गुमहार हैं क्योंकि प्रभु की ''आज्ञाओं'' को मानकर ही उसके प्रति प्रेम दिखाया जाता है (यूहन्ना 14:15)। प्रेम वास्तव में व्यवस्था का पूरा होना है

(रोमियों 13:8-10) परन्तु इसका अर्थ किसी भी प्रकार से यह नहीं है कि सारी व्यवस्था केवल इसलिए हटा दी गई है क्योंकि कोई प्रभु से प्रेम करता है। कोई भी मूसा की व्यवस्था के द्वारा या व्यवस्था के किसी भी प्रबन्ध के द्वारा धर्मी नहीं ठहराया जा सकता, परन्तु ''वाचा'' कुछ शर्तों पर आधारित प्रतिज्ञाओं के पूरा होने का संकेत देती है।

पौलुस जानता था कि वह मूसा की व्यवस्था से स्वतन्त्र है,परन्तु उसने माना कि वह अभी भी ''मसीह की व्यवस्था के अधीन'' है (1 कुरिन्थियों 9:21)। हमारे साथ परमेश्वर का समझौता या अनुबन्ध ही हमारी अधीनता की मांग करता है। क्या कोई बिना आज्ञा माने प्रभु के प्रति अपने प्रेम को सचमुच में दिखा सकता है? किसी का उद्धार सुसमाचार के आज्ञापालन के बिना हो सकता है (2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10; 1 पतरस 4:17)? कोई आश्चर्य नहीं कि शमूएल ने शाऊल से कहा, ''सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है'' (1 शमूएल 15:22ख)।

किसी भी व्यवस्था को मानने के द्वारा उद्धार को कमाया नहीं जा सकता क्योंकि किसी का जीवन भी सिद्ध नहीं है (रोमियों 3:23)। चाहे कोई उद्धार को ''कमा'' नहीं सकता पर हर किसी के लिए मसीह की प्रेम भरी पुकार को अपने स्वयं की पहल से उत्तर देना आवश्यक है (मत्ती 11:28-30; प्रकाशितवाक्य 3:20)। सारी आज्ञाओं को मानने के बाद भी हम ''निकम्मे दास'' ही हैं (लूका 17:10)। किसी का भी उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा ही होता है।

परमेश्वर के साथ संगति (8:10, 11)

''मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा'' और ''सब मुझे जान लेंगे'' नई वाचा की महत्वपूर्ण प्रतिज्ञाएं हैं। परमेश्वर के साथ चलते और उसके लिए जीवन बिताते हुए रहने पर हमारी उसके साथ एक पक्की संगति बनती है। यह पवित्र शास्त्र का अलग विचार नहीं है परन्तु इसका सुझाव कई अलग-अलग ढंगों से लिया गया है। प्रकाशितवाक्य 3:20 में यीशु ने उसके साथ जो अपने हृदय के ''द्वार को खोलता'' है और उसे भीतर आने देता है, भोजन करने का वचन दिया। यूहन्ना 17:21 में उसने प्रार्थना की ''कि वे सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, जिससे संसार विश्वास करे कि तू ही ने मुझे भेजा है।'' मसीही लोग पिता और पुत्र दोनों ''में'' हो सकते हैं, जो निकट संगति की अवधारणा का सुझाव देता है। यीशु ने कहा कि चेले ''डालियां'' हैं और वह दाखलता है (यूहन्ना 15:5)। मसीह में जो दाखलता है ''बने रहने'' का कर्त्तव्य चेलों का है; यदि कोई बना नहीं रहता तो उसे काटकर डाली की तरह आग में झोंक दिया जाएगा (15:6)। ''ज्योति में चलना'' (1 यूहन्ना 1:7) मसीह में या उसके पीछे चलना है।

हमारा परमेश्वर अब हमारे साथ नज़दीकी संगति में है; हम इस वर्तमान जीवन में उसके बच्चे हैं। पौलुस ने कुरिन्थियों को संसार में से निकलकर अलग होने को सुझाया क्योंकि हम उसके हैं और वह हमारा है (2 कुरिन्थियों 6:16-18)। प्रकाशितवाक्य 21:3, 4 आम तौर पर स्वर्ग के लिए लागू किया जाता है परन्तु परमेश्वर हमारे साथ अब वास करता है। वह हमारे दुखों और भयों को दूर कर देता, मृत्यु की पीड़ाओं को मिटा देता है (देखें इब्रानियों 2:14, 15)। मसीह में हम दासता से छूट जाते हैं। हमारे साथ परमेश्वर का होना एक वर्तमान वास्तविकता

है। नई वाचा इस सब की वह और बातों की प्रतिज्ञाएं करती हैं।

अन्त का समय आने पर परमेश्वर पूरी तरह से और सदा के लिए हमारे साथ रहेगा। कलीसिया स्वर्ग का प्रतिबिम्ब दिखाते हुए वर्तमान वास्तविकता है (प्रकाशितवाक्य 21:3)। प्रतिज्ञा का और बड़े ढंग से पूरा होना जैसे इस संसार में अपने जीवनों के लिए दावा नहीं किया जा सकता।

नई वाचा के अधीन हम आज भी ''रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:7)। उस विश्वास से और उसके द्वारा मिलने वाले वचन से हम परमेश्वर को जानते हैं (रोमियों 10:17), न कि ''व्यक्तिगत अनुभव'' के द्वारा। परमेश्वर हमें व्यक्तिगत रूप में जानता है, परन्तु हम उसे उस प्रकार से नहीं जानते हैं। हम उसे हर ढंग से जैसे हमें जानना चाहिए उसे जान सकते हैं, बाइबल के अपने अध्ययन और ज्ञान और विश्वास में अपनी बढ़ोतरी के द्वारा। अच्छे हों या बुरे, जीवन के अनुभव हमें उसकी प्रतिज्ञाओं और आशिषों पर और धन्यवाद देने में सहायक हो सकते हैं। हां, परमेश्वर में हमारा अपना विश्वास होना आवश्यक है, परन्तु उसके साथ कोई भी अनुभव जो हमारे दोनों के ''निजी'' सम्बन्ध को बनाता है, महिमा के लिए राह देखनी आवश्यक है।

विश्वास और पुरातत्व (8:13)

इब्रानियों की पुस्तक लिखे जाने के बाद मन्दिर शीघ्र ही खत्म हो जाना था: ''सूर्य चाहे उदय हो चुका था पर चांद अभी अलोप नहीं हुआ था।''[28] यीशु ने भविष्यवाणी की थी, ''यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा'' (मत्ती 24:2ख)। मन्दिर के विनाश के कारण पर बहस हो चुकी है। जोसेफस ने कहा है कि टाइटस ने इसे नष्ट न करने की आज्ञा दी। मन्दिर को भस्म करने वाली आग की बात पर कुछ व्याख्या हो सकी है; याद रखें कि मन्दिर का अधिकतर भाग सोने से ढका हुआ था। भीषण आग से सोना पिघल जाने के कारण कुछ सोना चट्टान की दरारों में बह गया होगा। सिपाहियों को कुछ सोने को निकालने के लिए पत्थरों को तोड़ना पड़ा होगा। फिर उन्होंने पत्थरों को नीचे सड़क पर फैंक दिया। मन्दिर की ''रचना'' (मत्ती 24:1) पूरी तरह से नष्ट हो गई और उनके कई पत्थर आज भी वहीं पड़े हैं, जहां 70 ईस्वी में गिरे थे। बेशक और लोगों ने पुराने यरूशलेम में उन्हें घर बनाने के लिए इस्तेमाल कर लिया। कुछ संदेहवादियों ने तर्क दिया है कि यरूशलेम में कोई मन्दिर नहीं था, परन्तु पुरातत्वीय प्रमाण से वे गलत साबित हो चुके हैं।

बाइबल के छात्र और विद्वान के लिए पुरातत्व एक बड़ा औजार है; परन्तु यह कभी भी परमेश्वर और उसके वचन में विश्वास पैदा करने में बाइबल के प्रमाण का स्थान नहीं ले सकता। यह विश्वास के लिए प्रमाण और बाइबल की हमारी समझ को बढ़ने के लिए कई दिलचस्प पहलू दे सकता है, परन्तु यह कभी यह साबित या गलत साबित नहीं कर सकता कि परमेश्वर है, कि मसीह का जन्म कुवारी से हुआ या वह मुर्दों में से जी उठा। जब-जब पुराविशेषों की खोज होगी बाइबल की ऐतिहासिक विश्वसनीयता का प्रमाण मिलता रहेगा। कालांतर में कई बार ऐसा हुआ है कि आश्चर्य होता है कि कोई समझदार पाठक बाइबल पर कैसे संदेह कर सकता है। उदाहरण के लिए बहुत पहले बाइबल ने पिलातुस के बारे में बताया था, परन्तु 1961 तक पुरातत्व

ने उसके ऐतिहासिक अस्तित्व की पुष्टि नहीं की, जब कैसरिया के खण्डहरों में एक पत्थर पर उसका नाम खुदा हुआ पाया गया। ऐसी खोज से विश्वास उत्पन्न नहीं होता परन्तु यह विश्वासी को बड़ी सांत्वना और रोमांच दे सकती है।

टिप्पणियां

[1]'' 'सार' [KJV] शब्द *kephalaios* का अनुवाद है जिसका अर्थ है 'मुख्य बात।' यह जो कुछ पहले कहा गया है, उसका जोड़ नहीं है बल्कि जो आगे कहा गया है उसकी मुख्य बात है'' (केन्नथ सेमुएल वुएस्ट, *हिब्रूज़ इन द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1951], 140)। [2]गरेथ एल. रीस, *ए क्रिटिकल एंड एक्सजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (मोबर्ली, मिजोरी: स्क्रिप्चर एक्सपोज़िशन बुक्स, 1992), 125, एन. 5. [3]कुछ हद तक यह सही हो सकता है, परन्तु परमेश्वर अभी भी काइफा को अपना प्रतिनिधि मानता होगा, क्योंकि कम से कम एक अवसर पर आत्मा ने उसके द्वारा भविष्यवाणी की बात कही थी (यूहन्ना 11:47-53)। [4]रॉबर्ट मिलिगन, *ए कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (सिनसिनाटी: चेस एंड हॉल, 1876; रिप्रिंट, नैशविल्ल: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1975), 276-80. [5]डोनल्ड गुथरी, *द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री*, द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983), 172. [6]एफ़. एफ़. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़*, द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), 164-65. [7]नील आर. लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 2002), 105. [8]रोमियों 6:17, 18 में पौलुस ने *tupos* शब्द का इस्तेमाल पाप से बचने के लिए आज्ञा मानी जाने वाली बात के रूप में किया। ''नमूने'' का अर्थ अवश्य ही बपतिस्मे में आज्ञापालन होगा (6:3, 4), जो हमारे आज्ञापालन में मसीह की मत्यु, दफनाए जाने और जी उठने का ''रूप'' है। [9]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन ने नये नियम के अधीन परमेश्वर की सेवा करने के ढंग पर उसके निर्देश के लिए ''नमूना'' पर तीन पृष्ठों की चर्चा दी है। प्रेरितों के काम में से उसने यह तर्क दिया कि मसीह में मनपरिवर्तन में आज्ञापालन के कार्यों लिए परमेश्वर का एक नमूना है, जिसमें परिवर्तित होने वाले हर व्यक्ति को उन्हीं नियमों या ''उद्धार की योजना'' को मानना आवश्यक है। उसने और तर्क दिया कि पवित्र शास्त्र उस माध्यम को स्पष्ट बताता है जिसके द्वारा हमें परमेश्वर की आराधना करनी है। सबसे बढ़कर उसने दिखाया कि मसीही जीवन जीने के ढंग का एक नमूना है। (जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन हिब्रूज़* [ऑस्टिन, टैक्सस: फ़र्म फ़ाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1971], 170-73.) [10]जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ़ हिब्रूज़*, 2रा संस्क. (सरसी, आरकैंसा: बाय द आथर, 1984), 89.

[11]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 156. [12]वही। [13]फिलो *लाइफ ऑफ़ मोज़ज़, II* 15. [14]ब्रूस, 167. [15]''नया'' के लिए शब्द (*kainos*) का अर्थ है ''बिल्कुल नया।'' [16]मिलिगन, 290-91 से लिया गया। [17]गुथरी, 175. [18]ब्रूस, 173. [19]क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री*, द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 386-87. [20]रीस, 135, एन. 42.

[21]लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे*, 160. [22]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी कॉन्फिडेंट: ऐन एक्सपोज़िटरी स्टडी ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स, 1982), 93. [23]रेमंड ब्राउन, *द मैसेज ऑफ़ हिब्रूज़: क्राइस्ट अबव ऑल*, द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1982), 142.[24]यह विचार रे. सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़*, द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 87 से लिया गया है। [25]अगली बात ब्राउन, 150-51 से ली गई। [26]अगली बात लाइटफुट, *एवरीवन 'स गाइड टू हिब्रूज़*, 108-11 से ली गई। [27]ह्यूगो मैकोर्ड, *फिफ्टी ईयर्स ऑफ़ लेक्चर्स* (एटवुड, टैनिसी: प्राइवेटली प्रिंटिड, तिथि नहीं), 183 से लिया गया। [28]आर्थर डब्ल्यू. पिंक, *ऐन एक्सपोज़िशन ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 436.